SHODHPATRA: INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENCE AND HUMANITIES
E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 12 | December 2025

माध्यमिक स्तर के विशिष्ट विद्यार्थियों के अभिभावकीय संलग्नता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

विजय प्रकाश तिवारी
शोध छात्र (शिक्षाशास्त्र)
जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय चित्रकूट (उ.प्र.)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य प्रयागराज जिले में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विशिष्ट विद्यार्थियों के अभिभावकीय सलंग्नता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना है। अभिभावकीय सलंग्नता शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग के आधार पर, क्षेत्र के आधार पर तथा शहरी एवं ग्रामीण विशिष्ट विद्यार्थियों के अभिभावकीय सलंग्नता का अध्ययन करना है। न्यादर्श के रूप में प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है, विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। अध्ययन हेतु आंकड़ों के संग्रहण के लिए डॉ. विजय लक्ष्मी चौहान तथा गुंजन गनोट अरोड़ा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत स्केल का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष के रूप में पाया गया है कि माध्यमिक स्तर के पुरुष विशिष्ट विद्यार्थियों की अभिभावकीय सलंग्नता महिला विशिष्ट विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है तथा शहरी विशिष्ट विद्यार्थियों की अभिभावकीय सलंग्नता ग्रामीण विशिष्ट विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है।

मुख्य शब्द: माध्यमिक स्तर, अभिभावकीय संलग्नता, शैक्षिक उपलब्धि, विशिष्ट विद्यार्थी।

प्रस्तावना

शिक्षा के क्षेत्र में यह सर्वविदित है कि विद्यार्थी की सफलता में विद्यालय और परिवार दोनों की अहम भूमिका होती है। माध्यमिक स्तर, जहाँ किशोरों का सर्वांगीण विकास होता है, वहाँ यह भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, खासकर उन विद्यार्थियों के लिए जो सामान्य से भिन्न होते हैं (विशिष्ट विद्यार्थी या दिव्यांग, जो सीखने में कठिनाई वाले है)। परिवार एक पवित्र एवं उपयोगी संस्था है जिसमें मानव की सर्वांगीण प्रगति का आधार, सहयोग, सहायता एवं पारस्परिकता की भावना है। यह भावना ही वह शक्ति है जिसके आधार पर मनुष्य जंगलीपन से आगे बढ़कर आज सभ्य स्थिति में पहुंचा है। सहयोग की भावना ही मानव जाति की प्रगति का मूल कारण रही है। एकता, सामाजिकता, मैत्री आदि की सहकारी शक्ति ने आज मानव सभ्यता को उच्च स्तर पर पहुंचा दिया है। परिवार संस्था में जहाँ पुरुष और स्त्री की प्रेरणा का प्रदर्शन किया गया है, वहाँ पूरी संस्था अनुशासन, सेवा, त्याग, सहिष्णुता से बंधी हुई है और इन्हीं पारिवारिक मर्यादाओं पर समाज की व्यवस्था, शांति और विकास निर्भर करता है। परिवार में माता-पिता, पुत्र, बहन, भाई, पति, सगे-संबंधी, रिश्तेदार परस्पर कर्तव्य धर्म में बंधे हुए हैं। कर्तव्य की भावना ही मनुष्य में एक-दूसरे के प्रति सद्भावना, सेवा और शुभकामनाओं को उत्पन्न करती है। माता-पिता के व्यक्तिगत व्यवहार के साथ-साथ पारिवारिक वातावरण भी बच्चों और सदस्यों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिस घर में लड़ाई-झगड़ा और क्लेश होता है, उस परिवार के बच्चे और अन्य सदस्य आपसी सहयोग का मूल्य नहीं समझ पाते। उनमें स्वार्थ और कलह प्रबल हो जाते हैं। विशिष्ट विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों में अभिभावकीय संलग्नता एक प्रमुख कारक के रूप में उभरकर सामने आती है। अभिभावकीय संलग्नता का तात्पर्य अभिभावकों द्वारा बच्चों की शिक्षा में रुचि लेना, गृहकार्य में सहयोग करना, विद्यालयीय गतिविधियों में भागीदारी करना तथा शिक्षकों

के साथ निरंतर संवाद बनाए रखना है।

माध्यमिक स्तर के विशिष्ट विद्यार्थियों (विशेष आवश्यकता वाले) की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावकीय संलग्नता का गहरा और सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जहाँ अभिभावकों का सक्रिय सहयोग, जैसे घर पर पढ़ाई में मदद, स्कूल से संवाद और निगरानी, बच्चों के आत्मविश्वास, प्रेरणा और बेहतर परिणाम के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उन्हें सीखने के लिए एक सहयोगात्मक वातावरण देता है, जिससे शिक्षा में अपव्यय और अवरोध को कम किया जा सकता है। अभिभावकीय संलग्नता का मतलब है कि अभिभावक अपने बच्चे की शिक्षा में किस हद तक सक्रिय रहते हैं—जैसे पढ़ाई में मदद करना, स्कूल से संपर्क रखना, और बच्चे के लिए एक सपोर्टिव वातावरण बनाना। शोध बताते हैं कि जब अभिभावक सक्रिय रूप से जुड़े होते हैं, तो विशिष्ट विद्यार्थियों (जैसे श्रवण-बाधित, दृष्टि-बाधित या अन्य दिव्यांग बच्चे) की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार होता है। पप्पट्टू, जसर और वनिता, जे. (2017), ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच विज्ञान में शैक्षणिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण और इसके प्रभाव पर एक अध्ययन किया। यह शोध पलक्कड़ जिले के 8 स्कूलों से 300 सैंपल साइज के साथ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच विज्ञान में शैक्षणिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण और इसके प्रभाव की जांच करने के उद्देश्य से किया गया है। मानक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच पारिवारिक पर्यावरण कारकों और विज्ञान कौशल में उपलब्धि के बीच कोई संबंध मौजूद नहीं है। जोस गुस्टेम्स-कार्निसर, कैटरिना काल्डेरोन और डिएगो काल्डेरोन-गैरिडो (2019), विश्वविद्यालय के छात्र तनाव का अनुभव करते हैं, और वे इस तनाव का सामना कैसे करते हैं, यह उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। इस अध्ययन ने शिक्षक शिक्षा के छात्रों में तनाव की जांच की और इसके तीन उद्देश्य थेरू तनाव और मुकाबला करने की शैलियों के विभिन्न डिग्री का वर्णन करना; तनाव, मुकाबला करने की रणनीतियों और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों का अध्ययन करना और यह जांचना कि क्या बढ़ती उम्र 334 विश्वविद्यालय छात्रों में शैक्षणिक उपलब्धि पर तनाव के प्रभावों को मध्यम कर सकती है। तीन मुख्य निष्कर्ष थे कई छात्रों ने तनाव का अनुभव किया और परिहार मुकाबला रणनीतियों का उपयोग किया; जो छात्र कम तनाव में थे और संज्ञानात्मक परिहार में कम और समस्या-केंद्रित मुकाबला करने में अधिक लगे हुए थे, वे छात्र भी अधिक शैक्षणिक उपलब्धि हासिल करने वाले छात्र थे; और अधिक तनाव में रहने वाले छात्रों का प्रदर्शन खराब था।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व –

- ❖ विशिष्ट विद्यार्थियों की आवश्यक जरूरतों में अभिभावकीय संलग्नता उनके लिए अतिरिक्त सहायक तंत्र का काम करती है।
- ❖ शैक्षिक अंतराल को कम करने के लिए अभिभावकीय संलग्नता महत्वपूर्ण है।
- ❖ अभिभावकीय संलग्नता के द्वारा विशिष्ट विद्यार्थियों की भावनात्मक और मानसिक स्वास्थ्य ठीक रहती है, जिससे अकादमिक प्रदर्शन बेहतर हो सके।
- ❖ यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों और नीति निर्माताओं को यह समझने में मदद करेगा कि विशिष्ट बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है।
- ❖ अभिभावकीय संलग्नता से समावेशन को बढ़ावा मिलने के लिए।

उद्देश्य-

1. लिंग के आधार पर शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावकीय संलग्नता का अध्ययन करना ।

2. क्षेत्र के आधार पर शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावकीय संलग्नता का अध्ययन करना।

3. शहरी एवं ग्रामीण विशिष्ट विद्यार्थियों के अभिभावकीय सलंग्नता का अध्ययन करना।

परिकल्पना-

1. लिंग के आधार पर शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावकीय संलग्नता में अंतर है।

2. क्षेत्र के आधार पर शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावकीय संलग्नता में अंतर है।

3. शहरी एवं ग्रामीण विशिष्ट विद्यार्थियों के अभिभावकीय सलंग्नता में अंतर है।

शोध विधि-

प्रस्तुत अध्ययन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा। जिसका उद्देश्य विशिष्ट विद्यार्थियों (शहरी एवं ग्रामीण) के अभिभावकीय सलंग्नता का विश्लेषण एवं तुलना करना है। इस शोध में वैज्ञानिक पद्धति तथा व्यवस्थित प्रक्रियाओं का उपयोग करते हुए दोनों समूहों की शहरी एवं ग्रामीण अभिभावकीय सलंग्नता को मापित किया गया है। अभिभावकीय संलग्नता (Parental Involvement) का तात्पर्य अभिभावक अपने बच्चे की शिक्षा में किस हद तक सक्रिय रहते हैं— जैसे पढ़ाई में मदद करना, स्कूल से संपर्क रखना, और बच्चे के लिए एक ऐसा वातावरण बनाना जिसमें बच्चा अपने आप में सहज न महसूस करें।

समष्टि एवं न्यादर्श- वर्तमान शोध अध्ययन हेतु के अंतर्गत केवल प्रयागराज जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। 200 विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

उपकरण- अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा डॉ. विजय लक्ष्मी चौहान तथा गुंजन गनोट अरोरा द्वारा निर्मित व मानकीकृत स्केल का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन हेतु टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

व्याख्या और विश्लेषण-

सारणी-1

पुरुष और महिला छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावकीय संलग्नता के मध्यमान, मानक विचलन और टी-अनुपात

समूह	N	M	SD	D (M1-M2)	t- Score		सार्थकता स्तर
					Calculated Value	Table Value	
पुरुष	100	70.46	9.71	18.36	12.43	1.97	0.05
महिला	100	56.51	8.00				

व्याख्या- सारणी 1 के अवलोकन से पाया जाता है कि पुरुष छात्रों की अभिभावकीय संलग्नता का मध्यमान 70.46 तथा मानक विचलन 9.71 है तथा महिला छात्रों की अभिभावकीय संलग्नता का मध्यमान 56.51 तथा मानक विचलन

8.00 है। गणना टी-मान 12.43 है और टी-मान 1.97 है। चूंकि गणना टी-मान टी-मान से अधिक है इसलिए 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकार कर दिया जाता है।

उद्देश्य संख्या 1 की पूर्ति के लिए यह परिकल्पना की गई है कि अभिभावकीय सलंग्नता में पुरुष और महिला छात्रों के बीच अंतर है को 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकार किया जाता है और शून्य परिकल्पना अभिभावकीय सलंग्नता में पुरुष और महिला छात्रों के बीच कोई अंतर नहीं है को अस्वीकार कर दिया जाता है।

पुरुष छात्रों की अभिभावकीय सलंग्नता महिला छात्रों की तुलना में अधिक है।

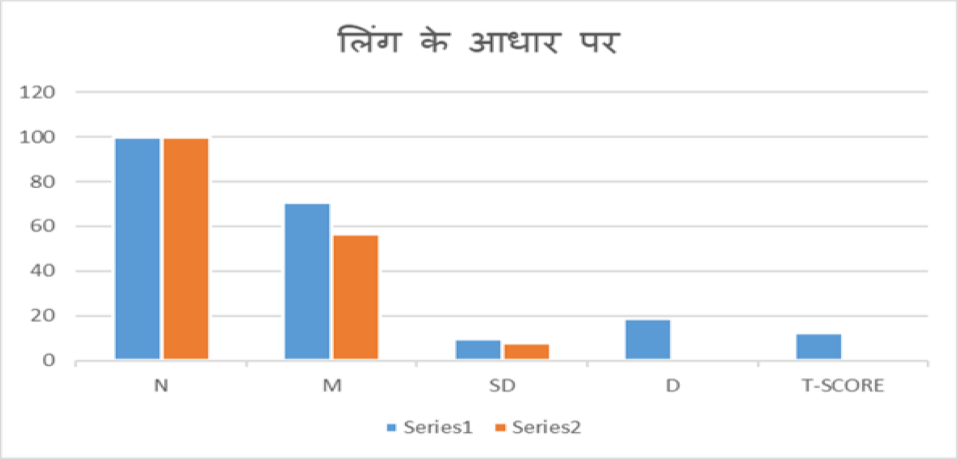

सारणी-2

शहरी और ग्रामीण छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावकीय संलग्नता के मध्यमान, मानक विचलन और टी-अनुपात

समूह	N	M	SD	D (M1-M2)	t- Score		सार्थकता स्तर
					Calculated Value	Table Value	
शहरी	100	66.57	11.91	5.43	4.54	1.97	0.05
ग्रामीण	100	60.81	10.62				

व्याख्या- सारणी 2 के अवलोकन से पाया जाता है कि शहरी छात्रों की अभिभावकीय संलग्नता का मध्यमान 66.57 तथा मानक विचलन 11.91 है तथा ग्रामीण छात्रों की अभिभावकीय संलग्नता का मध्यमान 60.81 तथा मानक विचलन 10.62 है। गणना टी-मान 4.54 है और टी-मान 1.97 है। चूंकि गणना टी-मान टी-मान से अधिक है इसलिए 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकार कर दिया जाता है।

उद्देश्य संख्या 2 की पूर्ति के लिए यह परिकल्पना की गई है कि अभिभावकीय सलंग्नता में शहरी और ग्रामीण छात्रों के बीच अंतर है को 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकार किया जाता है और शून्य परिकल्पना अभिभावकीय सलंग्नता में शहरी और ग्रामीण छात्रों के बीच कोई अंतर नहीं है को अस्वीकार कर दिया जाता है।

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 12 | December 2025

शहरी छात्रों की अभिभावकीय सलंग्नता ग्रामीण छात्रों की तुलना में अधिक है।

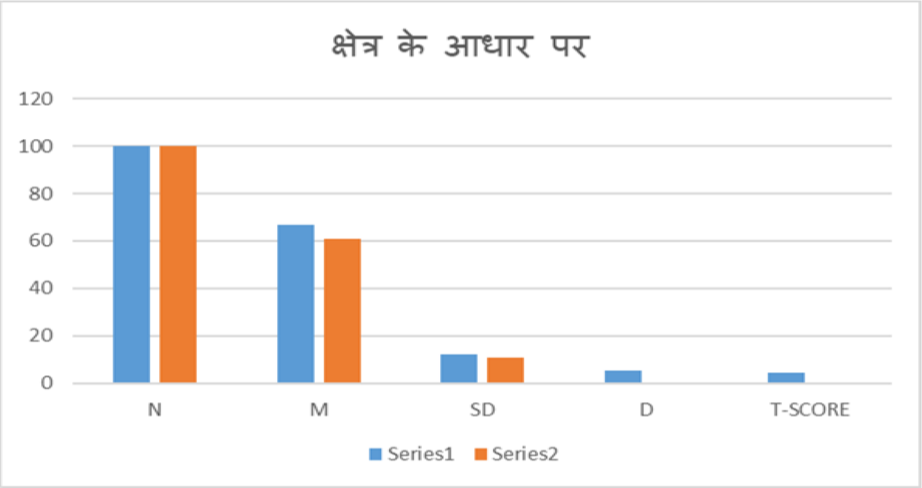

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य प्रयागराज जनपद के माध्यमिक स्तर के विशिष्ट विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावकीय संलग्नता का अध्ययन करना था। प्रस्तुत अध्ययन में यह पाया गया है कि, माध्यमिक स्तर के विशिष्ट विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावकीय संलग्नता में पुरुष और महिला छात्रों के बीच अंतर है या पुरुष छात्रों की अभिभावकीय संलग्नता महिला छात्रों की तुलना में अधिक है। इसका संकेत इस बात की ओर मिलता है कि पुरुष विद्यार्थियों के अभिभावक उनकी पढ़ाई में रुचि लेते हैं, विद्यालय से नियमित संपर्क रखते हैं, शैक्षिक गतिविधियों में सहयोग करते हैं तथा भावनात्मक एवं नैतिक समर्थन प्रदान करते हैं, जिस वजह से पुरुष विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षाकृत महिला विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाई गई। अभिभावकीय संलग्नता से पुरुष विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, प्रेरणा, अनुशासन एवं सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है, जो उनकी अकादमिक सफलता में सहायक सिद्ध होता है। इसके विपरीत अभिभावकीय संलग्नता में शहरी और ग्रामीण छात्रों के बीच अंतर है या शहरी छात्रों की अभिभावकीय संलग्नता ग्रामीण छात्रों की तुलना में अधिक है। जो इस बात की संकेत करता है कि, शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के अभिभावकों में से शहरी विद्यार्थियों के अभिभावक उनकी पढ़ाई में रुचि लेते हैं, विद्यालय से नियमित संपर्क रखते हैं, शैक्षिक गतिविधियों में सहयोग करते हैं तथा बिना किसी भेदभाव के उन्हें शिक्षा एवं भावनात्मक एवं नैतिक समर्थन प्रदान करते हैं, जिस कारण शहरी छात्रों की अभिभावकीय सलंग्नता ग्रामीण छात्रों की तुलना में अधिक है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि विद्यालय और अभिभावकों के बीच प्रभावी समन्वय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक है। अतः यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विशिष्ट विद्यार्थियों की शैक्षिक उन्नति के लिए अभिभावकीय संलग्नता को प्रोत्साहित करना अत्यंत आवश्यक है तथा शिक्षा व्यवस्था में इसे एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में शामिल किया जाना चाहिए।

भावी अध्ययन के लिए सुझाव-

वर्तमान शोध अध्ययन करते समय शोध समस्या से संबंधित कई अन्य विषय और तथ्य सामने आए जिन्हें भविष्य के शोध कार्य के लिए चुना जा सकता है। उनका विवरण इस प्रकार है-

1. प्रयुक्त उपकरणों की वैधता एवं विश्वसनीयता का परीक्षण करने के पश्चात ही उनका प्रयोग किया जाना चाहिए, ताकि शुद्ध एवं विश्वसनीय आंकड़े एकत्रित किए जा सकें।

2. शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित आंकड़े प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी द्वारा स्वयं एक मानकीकृत उपलब्धि मूल्यांकन उपकरण विकसित किया जाना चाहिए।
3. उन्नत शोधकर्ताओं के लिए शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना उचित होगा।
4. संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मनोवैज्ञानिक चरों के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ-सूची

1. नारद, अंशु एवं अब्दुल्ला, बिलकीस (2016)। वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर माता-पिता के प्रोत्साहन एवं विद्यालय का प्रभाव। रूपकथा जर्नल : मानविकी में अंत:विषय अध्ययन, विशेष अंक, खंड VIII, संख्या 2, पृ. 12–19।
2. लक्ष्मी, ऐश्वर्या आर. एवं अरोड़ा, मिनाक्षी (2006)। छात्रों की शैक्षणिक विद्यालयीय सफलता एवं क्षमता से संबंधित अभिभावकीय व्यवहार। Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, खंड 32, अंक 1, पृ. 47–52।
3. कुमार, राजेश एवं लाल, रोशन (2014)। किशोरों में पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन। International Journal of Indian Psychology, खंड 2, अंक 1, पृ. 146–155।
4. पप्पट्ट, जसर एवं वनिता, जे. (2017)। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में विज्ञान विषय की शैक्षणिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव।
5. Jain, Paras et al. (2017). Role of Family Environment and Academic Achievement of School Students of Working and Non-Working Mothers. International Journal of Advanced Education and Research, Vol. 2, Issue 2, March 2017, pp. 56–57.
6. Eaila, R. E. et al. (2015). Influence of Family Size and Family Type on Students' Academic Performance in Government Schools in Calabar Municipality, Cross River State, Nigeria. International Journal of Humanities Social Sciences and Education (IJHSSE), Vol. 2, Issue 11, November 2015, pp. 108–114.
7. Rafik et al. (2013). Parental Involvement and Academic Achievement: A Study on Secondary School Students of Lahore, Pakistan. International Journal of Humanities and Social Science, Vol. 3, No. 8, pp. 209–223.
8. Gustems-Carnicer, J., Calderon, C., & Calderon-Garrido, D. (2019). Stress, Coping Strategies and Academic Achievement in Teacher Education Students. European Journal of Teacher Education.
9. Leeson, Peter; Ciarrochi, Joseph & Heaven, Patrick C. L. (2008). Cognitive Ability, Personality and Academic Performance in Adolescence. Personality and Individual Differences, Vol. 45, p. 63.
10. Marshall, M. (2006). Parental Involvement and Educational Outcomes for Latino Students. Review of Policy Research, 23(5), pp. 1053–1076.
11. Martinez-Pons, M. (2002). Parental Influences on Children's Academic Self-Regulatory Development: From Theory to Practice. Theory into Practice, Vol. 41, No. 2, pp. 126–131.